## *हजारीप्रसाद द्विवेदी*

सांस्कृतिक समीक्षा का स्वरूप कैसे तय किया जाए , यह एक जटिल प्रश्न है क्योंकि पश्चिम और पूरब की स्वीकृत सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक समीक्षाओं में इस प्रकार का कोई शब्द प्रचलन में नहीं है । फिर यही एक प्रश्न यह भी खड़ा होता है कि परंपरागत सांस्कृतिक अवधारणाओं को केंद्र में रखकर जो समीक्षा की जाए उसके लिए कौन सा शब्द प्रयुक्त किया जाए - विशेषकर हिंदी साहित्य में आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की समीक्षा दृष्टि को हम कौन सा नाम दे - तथा आलोचना की सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक संगति के साथ उनकी समीक्षा के वर्तमान स्वरूप को किस रूप में विश्लेषित करें ? इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमे समीक्षा के कई पक्ष को देखना पड़ेगा । पहला , यह कि आ. द्विवेदी स्वयं साहित्य तथा समीक्षा की किस अवधारणा से अपने को जोड़े हुए चलते हैं । दूसरा प्रश्न यह है कि यदि इसे सांस्कृतिक समीक्षा कहे तो परम्परा की सांस्कृतिक चेतना इतिहास दृष्टि होगी या फिर उस दृष्टि को हम आलोचना के सैद्धान्तिक मूल्य के रूप में स्वीकृति देंगे । तीसरा प्रश्न यह है कि ऐतिहासिक सांस्कृतिक अवधारणाओं के अनेक सन्दर्भ है । आ. द्विवेदी की समीक्षा जिन अवधारणाओं से जुड़ी है - क्या उसे सांस्कृतिक मान्यता के अंतिम रूप में स्वीकार किया जा सकता है ? यहां इन तीन प्रश्नों के उत्तरों के माध्यम से उनकी सांस्कृतिक समीक्षा की सैद्धान्तिक मान्यताओं पर विचार अपेक्षित है । आ. द्विवेदी की सैद्धान्तिक समीक्षा शुक्ल जी के एक कदम विपरीत है । आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के इतिहास दृष्टि , जीवन जीने का परिवेश , संस्कार , सांस्कृतिक परंपरा एवं उसके मूल्य में विकसित जातीय बोध के विश्लेषण की व्यवहारिक समीक्षा के लिए आधार मानते है । आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की साहित्य दृष्टि निश्चित ही सबसे पृथक है । इतिहास तथा परंपरा के उन

संस्कारों को सृजन के संदर्भ से जोड़ना जो किसी जाति के साथ अक्षुण्ण भाव से निरंतर गतिशील होते रहते है - सांस्कृतिक परंपरा और उसकी सांस्कृतिक गतिशीलता । डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल ने द्विवेदी को एक साथ परम्पराबोध , इतिहासबोध और सांस्कृतिकबोध का आलोचक माना है । आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षक प्रत्येक मानव को उस देश , देश की व्यवस्था , इतिहास को परंपरा , सांस्कृतिक संस्कार की उपज मानते है । भारतीय मानवतावादी संस्कारों से पला मनुष्य यूरोप का व्यक्तिवादी एवं भोगवादी चेतना का मनुष्य आकस्मिक रूप में नहीं बन सकता । जॉर्ज ग्रियर्सन का ' विरुद्धों का सामंजस्य , जिसकी सराहना आ. शुक्ल ने की , आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी , रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा हिंदी के अन्य आलोचक बराबर करते रहे है , वह हमारी राष्ट्रीय तथा जातीय अस्मिता का अभिन्न एवं अनिवार्य रूप है । आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की व्यवहारिक तथा सैद्धान्तिक समीक्षा के साथ सांस्कृतिक समीक्षा के पाँच तत्व को हम इस प्रकार देख सकते है -

To be contd…...